Konsole Group

पढ़ाई के लिए वास्तु

मार्च के महीने में परीक्षा के मौसम की शुरुआत होती है. यह समय छात्र / छात्राओं के लिए तनाव भरा होता है. आइये, ऐसे में देखते हैं की वास्तु शास्त्र के सिद्धांत छात्रों की कितनी मदद करते हैं. यह सही है की वास्तु छात्रों को उनके परीक्षा परिणामों में सीधे कोई जादुई परिवर्तन नहीं कर सकता किन्तु यह उनके प्रयासों को सही दिशा में पुनर्निर्देश कर और एक तनाव रहित वातावरण में बेहतर परिणाम दिलाने का रास्ता अवश्य दिखा देता है. चलिए, क्रमवार देखते हैं किन-किन क्षेत्रों में इन सिद्धांतों का पालन लाभदायक हो सकता है...

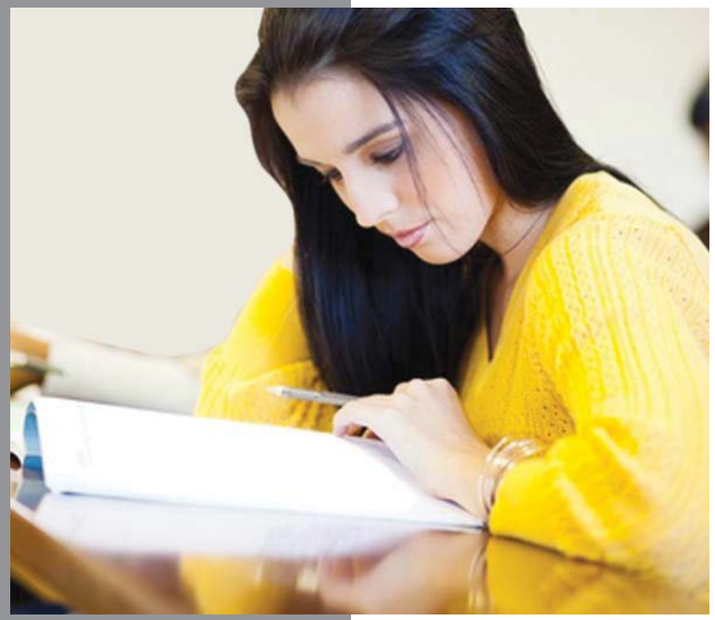

अध्ययन कक्ष की दिशा

पढ़ाई के लिए घर के ''पूर्व-उत्तर (ईशान)'', ''पूर्व'' अथवा ''उत्तर'' दिशाओं में स्थित कमरों का चयन करना चाहिए. इन दिशाओं में भरपूर धनात्मक ऊर्जा का प्रवाह रहता है. अत: छात्रों की अपने गूढ़ विषयों को समझने और ग्रहण करने में आसानी होती होती है, याद की हुई पाठ्य सामाग्री देर तक याद आती रहती है.

नोट - यदि किसी कारणवश इन दिशाओं में अध्ययन कक्ष नहीं बन पा रहे तो घर के पश्चिम में स्थित कमरे का चुनाव किया जा सकता है.

अध्ययन कक्ष की आंतरिक व्यवस्था

- पढ़ाई की टेबल दीवार से सटाकर न रखें. जहां तक सम्भव हो टेबल इस तरह रखा जाए के पढ़ते समय छात्र का मुह पूर्व या उत्तर दिशा की ओर हो.
- प्रकाश के लिए ट्यूब लाइट पूर्व में लगाएं. यदि टेबल लैंप का इस्तेमाल करते हैं तो इसे दक्षिण पूर्व दिशा में रखें.
- घडी को उत्तर दिशा में रखना या उत्तर की दीवार पर लगाना सर्वश्रेष्ठ है.
- कंप्यूटर का स्थान भी दक्षिण पूर्व में उचित है.
- अपने इष्टदेव का चित्र विशेषकर सरस्वती एवं गणपति जी के चित्र सामने रखने से एकाग्रता बढ़ती है.
- टेबल पर सिर्फ उन्हीं पुस्तकों को रखें जो तुरंत पढ़ी जा रही हों. बाकी को अलमारी में व्यवस्थित रखना चाहिए. पुस्तकों के बेतरतीब से टेबल पर पड़े रहने से ऋणात्मक ऊर्जा का क्षेत्र बन जाता है.
- टेबल के उत्तर एवं पूर्व में कोई भी भारी सामग्री यहां तक की भारी पुस्तकों का रखना भी उचित नहीं है.
- कुर्सी सीधे किन्तु आरामदायक, पीठ को सपोर्ट करने वाली होनी चाहिए तथा इसे पूर्व अथवा उत्तर मुखी रखना चाहिए. ध्यान रखें की छात्र की कुर्सी किसी भी हालत में बीम के नीचे न हो अन्यथा बीम से आने वाली ऋणात्मक ऊर्जा उसके मस्तिष्क में जबरदस्त तनाव पैदा कर देगी और पढ़ाई सही ढंग से नहीं हो पाएगी.
- पुस्तकों की अलमारी दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) अथवा पश्चिम में रखना चाहिए.
- छात्र का पलंग ऐसे लगाया जाना चाहिए की सोते समय उसका सर दक्षिण दिशा में हो एवं पैर उत्तर की ओर. ऐसा करने से छात्र का शरीर पृथ्वी के चुंबकीय धारा के समांतर होगा एवं रक्त का परवाह मस्तिष्क की ओर उचित रूप से होगा. उसे अच्छी नींद आएगी एवं शरीर तरो-ताज़ा रहेगा. यदि ऐसा संभव न हो तो पूर्व की ओर सर रखकर सोना द्वितीय प्राथमिकता में आता है.
- यदि कूलर का उपयोग करते हैं तो उत्तर या पूर्व की खिड़की में लगाना उचित है.
- कमरे में पीने के पानी का बर्तन / घड़ा उत्तर-पूर्व में रखा जाना चाहिए.
- अध्ययन कक्ष की दीवारों के रंग हल्का पीला या नारंगी होना चाहिए. इससे पढ़ाई का वातावरण निर्माण होता है एवं छात्रों को आंतरिक ऊर्जा का अनुभव होता है.

कुछ अन्य सुझाव

- अध्ययन कक्ष को साफ़-सुथरा रखें.
- यदि समभव हो तो जूते चप्पल एवं उपयोग किये हुए मोज़े कक्ष में नहीं रखें.
- जूठे बर्तन भी कक्ष के बाहर रखें.
- टीवी, म्यूजिक सिस्टम आदि ध्यान भटकाने वाली चींजे भी कक्ष में रखना उचित नहीं है. अत: उससे कम से कम परीक्षा के दिनों बचना चाहिए.
- लम्बे समय तक बॉलपॉइंट पेन के इस्तेमाल से स्पोंडे लाइटिस होने की संभावना होती है, ऐसा एक्यूप्रेसर पॉइंट्स पर गलत दबाव पड़ने से होता है अत: फाइबर टिप पेन, जेल पेन अथवा इंक पेन का इस्तेमाल करना ज्यादा उचित है.

अनिल कुमार वर्मा
बी टेक, एफ आई ई, एफ आई वी,
चार्टर्ड इंजीनियर, वास्तु / जियोपैथिक स्ट्रेस
सलाहकार एवं वाटर डाउसर,
सर्टिफाइड साईंटिफिक एवं
पिरामिड वास्तु विशेषज्ञ
मोबाइल : 94250 28600

Talk to your target customers directly

Bulk SMS | SMS Panel | Voice Calls | Toll Free No. | Missed Call Service